ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

नागार्जुन के उपन्यास बाबा बटेसर नाथ में व्यंग्य
Satire in Nagarjuna's novel Baba Bateshwar Nath

Paper id: 15717 Submission: 11/01/2022, Date of Acceptance: 21/01/2022, Date of Publication: 23/01/2022

विभा सिंह
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश / Abstract

बाबा बटेसर नाथ में व्यंग्य की मूल प्रवृत्ति यह है कि लेखक ने जड़ प्रकृति के एक घटक बरगद जो युगों-युगों से मानव समाज के विकास के तमाम स्तरों का साक्षी रहा है, से ग्रामीण युवकों नागरिकों की चेतना को उद्बुद्ध करता है। यह उन्यास भारत के उन तमाम बुद्धिजीवियों , कलाकारों, समाजहित चिन्तकों तथा संस्थाओं जिन्होंने अपना लक्ष्य ही पर संग्रह बना लिया है, पर करारा व्यंग्य है। जब जड़ बरगद की जड़े मानवता से दूर तक साथ निभाने के कारण मानवता की बेहतरी के लिए चिन्तित हो सकता है तो आखिरकार हम पढ़े-लिखे लोग क्या कर रहे हैं मानव जीवन की स्वार्थ वृत्ति पर यह उपन्यास एक तीखा व्यंग्य है। आज का मानव, मानव को बिना स्वार्थ देखने को तैयार नहीं है और बरगद अपना सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार है। अपने को मानवता के हक की भट्ठी में झोंकते हुए उस बूढ़े बरगद ने जो जयकिशन को सलाह दिया वह था वह था ग्राम पंचायतों की स्थापना का। नागार्जुन ने जब यह उपन्यास लिखा था तो अभी पंचायतीराज का प्रारूप भी शायद पूरी तरह तय नहीं हुआ था बाद में हुआ था बरगद प्रकृति का अंग है प्रकृति का अर्थ ही स्वाभाविक है इसलिए बरगद की राय नागार्जुन की राय में सर्वाधिक स्वाभाविक राय है इसी रास्ते पर चलकर मानवता का वास्तविक हित साधन हो सकता है।

The basic trend of the satire in Baba Batesar Nath is that the author evokes the consciousness of rural youth citizens from the banyan, a component of inert nature, which has been a witness to all the levels of development of human society since ages. This novel is a satire on all those intellectuals, artists, social thinkers and institutions of India who have made a collection on their own goal. When the roots of the banyan root can be concerned for the betterment of humanity due to far away from humanity, then what are we educated people doing after all, this novel is a sharp satire on the selfishness of human life. Today's man is not ready to see man without selfishness and Banyan is ready to sacrifice everything. Throwing himself into the furnace of human rights, the old Banyan advised Jaikishan to establish village panchayats. When Nagarjuna wrote this novel So now the form of Panchayati Raj was also probably not completely decided, later it happened that banyan is a part of nature, the meaning of nature is natural, so the opinion of banyan is the most natural opinion in Nagarjuna's opinion, following this path should be the real benefit of humanity. could.

Keywords: प्रवृत्ति , बुद्धिजीवी , न्यौछावर , परसंग्रह , पंचायती राज
Keywords: Tendencies, Intellectuals, Sacrifices, Collections, Panchayati Raj

प्रस्तावना

जीवन को साहित्य में अपनी सर्वांगमयता में प्रस्तुत करने का सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम उपन्यास है। नागार्जुन जीवन के वास्तविकताओं के साहित्यकार है यही कारण है कि कविता के साथ-साथ उपन्यास को भी अपनी रचना धर्मिता का माध्यम बनाया। कविता की सांकेतिकता कितनी मात्रा में जनता तक सम्प्रेषित हो सकती है यह उस समाज के पाठक पर आधारित है। मेरे कथन का तात्पर्य कविता पढ़ने के लिए थोड़ा परिष्कृत साहित्य संस्कार अपेक्षित है जबकि उपन्यास मानव के उबड़-खाबड़ जीवन के इतना पास है थोड़ा कम संस्कारिक व्यक्ति भी उन चीजों को हृदयंगम कर सकता है जो कि रचनाकार का मन्तव्य है। शायद उपन्यास विधा की इस जनप्रवृत्ति को देखते हुए ही ठोस प्रगतिवादी विचारधारा समन्वित साहित्यकार इस विधा में रचने को विवश हुए है। नागार्जुन के औपन्यासिक कृति में निहित व्यंग्य विचारणीय है। यहाँ इतना कह देना आवश्यक है कि नागार्जुन के व्यंग्य की प्रवृत्ति विवरणगत है वह भी परिवेश से ज्यादा सम्बन्धित है पूरा परिवेश ही जैसे एक खरे व्यंग्य को परिभाषित करने लगता है। यह व्यंग्य कहीं पात्रों के माध्यम से बोलता है, कहीं प्रत्यक्ष रूप से होता है, कहीं अप्रत्यक्ष रूप से होता है वह कहीं न कहीं समाज से जुड़ा होता है। उनके जनकवि का रूप उनके उपन्यासों में भी देखा जा सकता है। कारण जनता से जुड़े होने के कारण उनके दर्द को अपना समझना ही उनके प्रेरणा और साहित्य सृजन का स्रोत है।

बाबा बटेसर नाथ में व्यंग्य - बाबा बटेसर नाथ नागार्जुन का 157 पृष्ठों में व्याप्त एक लघु उपन्यास है अपने छोटे कलेवर में लेखक ने गागर में सागर भर दिया है। मूल कथा मिथिला जनपद के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक संघर्षों एवं उसके उत्थान-पतन पर प्रकाश डाला गया है। यह एक आँचलिक उपन्यास होने के कारण इसकी विषयवस्तु अंचल विशेष की है। आंचलिक उपन्यास में एक

कथा नहीं होती इस उपन्यास में भी अनेक कथाएँ है। इस उपन्यास में वट वृक्ष का मानवीयकरण किया गया है इसमें निम्न मध्यवर्गीय ग्रामीण जीवन चित्रित किया गया है।

बाबा बटेसर नाथ जयकिशन से सपने में ईस्ट इंडिया कम्पनी के माध्यम से ब्रिटिश कूटनीति स्वार्थी जमींदारों के अत्याचार कांग्रेस की भ्रष्ट और स्वार्थी शासन जमींदारों के उन्मूलन और गाँवों में आए परिवर्तन आदि की दर्द भरी व्यंग्यात्मक कहानी सुनाते हैं।

वट वृक्ष केवल निर्जीव वृक्ष न होकर मानवीय भावों एवं विकारों से युक्त संवेदनामय सजीव वृक्ष कल्पित किया गया है ऐसा लगता है कि वह समाज में व्याप्त किसानों का शोषण दलितों की दीन-हीन दशा, जमींदारों द्वारा किये अत्याचार, उत्पीड़न एवं शोषण आपसी ईर्ष्याद्वेष, समाज की परिवर्तनशील अवस्था, कांग्रेसी नेताओं की स्वार्थ वृत्ति, किसानों की साम्यवाद के प्रति सहज आस्था-भावना को देखने के लिए मूर्तियत रूप में विद्यमान है।

एक व्यंग्य यहाँ वट वृक्ष करता है बीते युग की सड़ांध का समर्थन किसी कीमत पर नहीं करूँगा भविष्य तेरे जैसे तरूणों के हाथ में है। अन्यंत्र जयकिशुन से कहते समय बाबा कहते हैं "तू जिस युग में पैदा हुआ है। वह राजाओं, जमींदारों और सेठों, साहूकारों का युग नहीं बल्कि तेरे जैसे आम नौजवानों का जमाना है।"1

अकेले व्यक्ति जमींदारों के अत्याचारों के विरोध में नहीं लड़ सकता इसलिए बाबा सामूहिक शक्ति पर बल देते है। समाज की बुराइयों के विरूद्ध लड़ने के लिए वह समाज संगठन करना चाहता है। सामाजिक शक्ति से अवगत करते समय बाबा जयकिशुन से कहता है "झींगुर एक तुच्छ कीड़ा होता है सैकड़ों हजारों की तादाद में जब एक स्वर होकर आवाज करने लगता है तो अजीब शमां बँध जाती है झींगुरों की अब अखण्ड झंकार कई-कई पहर तक चलती रहती है सामूहिक शक्ति की इस एकाग्र महिमा के आगे मेरा मस्तक सदैव नत होता रहा है और होता रहेगा।"2

अपने जीवन का उद्देश्य परोपकार मानते हुए वे कहते हैं अगर अपना जीवन दूसरे के काम न आता तो वह जीवन असफल है इसलिए सामान्यजनों के हितों के लिए बाबा को मृत्यु भी स्वीकार है बाबा जयकिशुन से कहता है।

"पहले तुम्हें बता दूँ मुझे मृत्यु का भय किंचित मात्र भी नहीं है। जीवन मुझे प्रिय नहीं है यह मत समझ लेना। भला वह कौन है जिसे जीवन से विरक्ति हो परन्तु "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय लोकानुमम्पाय".....

किसी सज्जन के मुख से मैंने कभी नहीं सुना जीने के लिए जीना है, नही है परोपकार के लिए जीना है। अगर मेरी मृत्यु जनसाधारण के लिए लाभप्रद हो तो नहीं चाहिए मुझको यह जीवन।"3

यह उक्ति स्वार्थी व्यक्तियों के लिए एक सबक है जो सिर्फ अपने लिए जीते हैं बाबा तन-मन से समाज का कल्याण करना चाहता है उसका जीवन सेवा परायण है उसका एक उदाहरण इस उपन्यास में देखिए -

"मुसीबत में अगर किसी के काम न आया तो यह जीवन बेकार है। बेटा भूख ने लोगों की अतड़ियों का रस सोख लिया है। मैं बेहया हरा-भरा होकर यह सब देखा करता हूँ बेचैनियों का तूफान उठा करता मेरे अन्दर, धरती पर बहुत गुस्सा आता है कि जड़ों को तो यह भी रस पहुँचाया करती है, पर अकाल ग्रस्त मानव की घोर उपेक्षा करती है।"4

बाबा-परदादा राउत के बारे में कहते हैं तेरे परदादा चार गज की गाढ़ी धोती और ढाई गज की चादर लेकर पहुनईन करने निकलता था। जूते उसने कभी नहीं देखे।5 यह उनकी आर्थिक स्थिति का द्योतक है। अंधविश्वास पर व्यंग्य करते हुए लेखक ने लिखा है - "पंडित ने महीनों तक चंड़ी पाठ किए साधकों ने एक-एक मंत्र को लाखों लाखों बार जपा सब व्यर्थ वरूण को दया नहीं आई।"6

उद्देश्य

उपन्यासकार ने धार्मिक अंधविश्वास रीति-रिवाज तथा कुप्रथाओं की कड़ी आलोचना करते हुए ग्रामीणजनों को उससे मुक्त होने का आदेश दिया है। सामाजिक कुप्रथाओं और रूढ़िग्रस्तता तोड़ने के लिए लेखक ने शिक्षा की अनिवार्यता व्यक्त की है जैसे-जैसे समाज मंे शिक्षा का प्रचार बढ़ता रहेगा वैसे लोग अंधश्रद्धा से मुक्त रहेंगे।

निष्कर्ष

अतः उपन्यासकार नागार्जुन एक सर्जनशील कलाकार हैं गरीबी दरिद्रता, भूख, पीड़ा को उन्होंने स्वयं बचपन से अनुभव किया है भ्रमणशील प्रवृत्ति के कारण उपेक्षित समाज को उन्होंने नजदीक से देखा है, परखा है अतः गरीबों को पक्षधर बनाकर साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति की है। इस तरह यह उपन्यास और उसमें निहित व्यंग्य सर्जना का व्यापक कैनवास देता है जो मानवता के सर्वाभाविक विकास के पक्ष में।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बाबा बटेसर नाथ, पृ0सं0-51*
2. *बाबा बटेसर नाथ, पृ0सं0-19*
3. *उमेश शास्त्री हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, पृ0सं0-1441*
4. *बाबा बटेसर नाथ, पृ0सं0-57*
5. *बाबा बटेसर नाथ, पृ0सं0-54*
6. *उपर्युक्त, पृ0सं0-55*